(b) whether it is a fact that large sums of money was disbursed by NWDB to voluntary agencies during the same period;

(c) if so, the amount so disbursed and the names of the receipient voluntary organisations yearwise; and

(d) what is Government's reaction regarding the acreage of land afforestated by NWDB as against the annual target of five million acres?

THE MINISTER OF ENVIRONMENT AND FORESTS (SHRI NILAMANI ROUTRAY): (a) The yearwise financial outlay of the National Wastelands Development Board since its inception is as under:

(Rs. in crores)

Year	Amount
1985-86	48.00
1986-87	52.48
1987-88	66.50
1988-89	60.00
1989-90	72.56
1990-91	85.00

(b) and (c) During the Seventh Five Year Plan, an amount of Rs. 1630.27 lakhs was released to various voluntary agencies all over the country under the Grants-in-aid Scheme for taking up projects for afforestation/wastelands development. An amount of Rs. 135.33 lakhs has been released so far during 1990-91.

The details of yearwise amounts disbursed to the voluntary agencies are given in the Annexure. [See Appendix CLV, Annexure No. 82].

(d) The National Wastelands Development Board was established in May 1985 and given the mandate to undertake a massive programme of afforestation and tree planting with people's participation. The Board was also made the nodal agency for coordinating the implementation of afforestation and tree planting activities under the Twenty-Point Programme. This covers the afforestation and tree planting activities being undertaken under various schemes of the National Wastelands Development Board, the Department of Rural Development, the Department of Agriculture & Cooperation, the State Plans, ets. In terms of programme coverage, the performance has been as given below:

Afforestation/Tree planting (in million ha)

	1985-86	1986-87	1987-88	1988-89	1989-90
Targets	1.45	1.71	1.80	2.00	1.68
Performance	1.51	1.75	1.78	2 12	1.71
Achievements	104.1%	102.3%	98.9%	106%	101.8%

सारनाथ में तिब्बतीयन संस्थान को आवंटित धनराशि

*272. **श्री शंकर दयाल सिंह**: क्या **प्रधान मंत्री** यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) सारनाथ स्थित तिब्बतीयन संस्थान के विकास के लिए पिछले तीन वर्षों में कितनी धनराशि आवंटित की गई थी; और

(ख) उक्त संस्थान में मुख्य रूप से किन-किन विषयों की पढ़ाई हो रही है और किन-किन देशों के छात्रों को वहां अध्ययन की सुविधा प्रदान की गई है ?

मानव संसाधन विकास मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री चिमन भाई मेहता): (क) सारनाथ स्थित केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान के लिए आवं-

टित की गई धन राशि इस प्रकार है :—

(लाख रुपये में)

	1987–88	1988–89	1989–90
योजनागत	66.40	49.00	70.00
योजनेर	31.00	43.00	37.85
कुल :	97.40	92.00	107.85

(ख) संस्थान में पढ़ाए जाने वाले मुख्य विषय इस प्रकार हैं—तिब्बती अध्ययन, संस्कृत, तिब्बती, पाली, अंग्रेजी और हिन्दी भाषाएं तथा एशियाई और तिब्बती इतिहास, राजनीति विज्ञान और अर्थशास्त्र। संस्थान में नेपाल, भूटान, संयुक्त राज्य अमरीका, जर्मनी, जापान और कनाडा सहित विभिन्न देशों से अध्येता और छात्र आ रहे हैं।

राजस्थान परमाणु ऊर्जा संयंत्र के एकक I तथा II द्वारा बिजली का उत्पादन

***273. डा. अबरार अहमद खान :** क्या **प्रधान** मंत्री 20 मार्च, 1990 को राज्य सभा में अतारांकित प्रश्न 942 के दिये गये उत्तर को देखेंगे और यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) इस बात के क्या कारण हैं कि राजस्थान परमाणु ऊर्जा संयंत्र के एकक I तथा एकक II में 1988 की तुलना में 1989 में बिजली का कम उत्पादन हुआ तथा यह एकक 1988 की तुलना में 1989 में अधिक दिनों तक बन्द रहे;

(ख) चालू वर्ष में उन दिनों का ब्यौरा क्या है जिनमें ये एकक कार्य करते रहे तथा जिन में ये बन्द रहे तथा एककों द्वारा इस अवधि में बिजली का कितना उत्पादन किया गया;

(ग) राजस्थान परमाणु ऊर्जा संयंत्र के अन्य प्रस्तावित एकक कब तक स्थापित किए जाने का प्रस्ताव है तथा वे बिजली-उत्पादन कब आरम्भ कर देंगे; और

(घ) राजस्थान परमाणु ऊर्जा संयंत्र द्वारा परमाणु ऊर्जा उत्पादन के लिये, आठवीं पंचवर्षीय योजना के दौरान, एकक वार, क्या लक्ष्य निर्धारित किया गया है ?

विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय में राज्य मंत्री (प्रो. एम. जी. के. मेनन) : (क) राजस्थान परमाणु बिजली घर के दोनों यूनिटों में 1988 की तुलना में 1989 में बिजली का उत्पादन मामूली सा कम होने के मुख्य कारण निम्नलिखित है:

1989 में पहले यूनिट को उसकी दक्षिण एंड शील्ड में हो रहे हल्के पानी के रिसाव को बन्द करने हेतु मरम्मत-कार्य के लिए 86 दिन के वास्ते, मंदक पम्प, प्राइमरी पम्प और ईंधन-भरण मशीन जैसे उपस्करों की मरम्मत के लिए 25 दिन के वास्ते तथा टर्बाइन, जिसका ब्लेड खराब हो गया था, की मरम्मत करने के लिए 28 दिन के वास्ते बन्द करना पड़ा था। दूसरे यूनिट को उसकी ईंधन-भरण